राजस्थान राज्य के अजमेर संभाग में प्राथमिक विद्यालय स्तर पर विद्यार्थी नामांकन की प्रवृत्ति का अध्ययन

सुरेन्द्र कुमार* और डॉ. मुरलीधर मिश्रा**

सारांश

प्रस्तुत अध्ययन राजस्थान राज्य के अजमेर संभाग में 1991 से 2010 तक प्राथमिक विद्यालयों में कुल विद्यार्थी नामांकन की प्रवृत्ति जानने हेतु किया गया है। आलोच्य अवधि (1991–2010) में प्राथमिक विद्यालयों में विद्यार्थियों के नामांकन का वर्णन होने के कारण यह अध्ययन वर्णनात्मक प्रकार का एवं नामांकन को अध्ययन की एक इकाई के रूप में लेने पर यह एक वैयक्तिक प्रकार का अध्ययन है। इस अध्ययन में अजमेर संभाग में 1991 से 2010 तक प्रारम्भिक शिक्षा (पूर्व प्राथमिक, प्राथमिक एवं उच्च प्राथमिक) में से एक इकाई प्राथमिक शिक्षा स्तर पर नामांकन (1991–2010) के द्वितीयक स्रोत से प्राप्त प्रदत्तों का उपयोग मुख्यतः किया गया है तथा विद्यार्थी नामांकन की प्रवृत्ति के निहित सन्दर्भों को समझने के लिए प्राथमिक स्रोत के अन्तर्गत विशेषज्ञ के रूप में शिक्षाविदों, शिक्षा अधिकारियों, प्रधानाध्यापकों एवं प्राथमिक विद्यालयीन शिक्षकों का चयन न्यादर्श चयन की सौद्देश्यपूर्ण विधि से किया गया। इस अध्ययन से यह निष्कर्ष प्राप्त होता है कि इस संभाग में अजमेर संभाग के प्राथमिक विद्यालयों में कुल नामांकन उपलब्धता के अध्ययन से यह निष्कर्ष निकलता है कि अजमेर संभाग के प्राथमिक विद्यालयों के कुल विद्यार्थी नामांकन में वृद्धि की प्रवृत्ति बिन्दु वर्ष 2009–10 को छोड़कर अन्य वर्षों में सतत् धनात्मक रही है। बिन्दु वर्ष 2000–01 में प्राथमिक विद्यालयों के विद्यार्थी नामांकन में वृद्धि की प्रवृत्ति तीव्र धनात्मक रही। वहीं बिन्दु वर्ष 2009–10 में विद्यार्थी नामांकन की प्रवृत्ति में ऋणात्मक वृद्धि दर्ज हुई। प्रथम दशक में द्वितीय दशक की तुलना में वृद्धि की प्रवृत्ति अधिक रही है। कुल आलोच्य अवधि में प्राथमिक विद्यालयों में नामांकन में वृद्धि की प्रवृत्ति तीव्र धनात्मक रही है।

प्रमुख शब्दावलीः प्राथमिक विद्यालय, विद्यार्थी नामांकन, नामांकन की प्रवृत्ति, विकासात्मक अध्ययन

प्रस्तावना

राजस्थान में स्वतन्त्रता के बाद से अब तक साक्षरता प्रतिशत में बहुत धीमी दर से वृद्धि हुई है। प्राथमिक स्तर की शिक्षण संस्थाओं का प्रसार गाँव और ढ़ाणी तक फैल गया लेकिन नामांकन में अभी तक बहुत अधिक प्रगति नहीं हो पायी है। स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् विकास के क्षेत्र में राजस्थान में कई महत्त्वपूर्ण योजनाएँ आयी और सफल भी हुई, लेकिन जनसंख्या वृद्धि, महिलाओं की स्थिति व बालिका शिक्षा आदि की दृष्टि से राज्य की हालत आज भी दयनीय है। कई गाँव अभी भी ऐसे हैं जहाँ पढ़ी–लिखी महिला नहीं हैं।

2001 की जनगणना के अनुसार अजमेर संभाग स्तर पर समग्र रूप से देखा जाये तो पता चलता है कि संभाग में कुल साक्षर जनसंख्या 3809604 है जिनमें 2522035 पुरूष तथा 1287569 महिलाएँ हैं। अजमेर जिले को राजस्थान का प्रथम पूर्ण साक्षर जिला घोषित किया गया है। इस जिले को शिक्षा के क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य करने के लिए 8 सितम्बर 2004 को सत्यन मैत्रेय पुरस्कार प्रदान किया गया है। राजस्थान राज्य में भीलवाड़ा जिले का पुरुषों की न्यूनतम साक्षरता वाले जिलों में पाँचवा स्थान व टोंक जिले का महिलाओं की न्यूनतम साक्षरता दर में पाँचवा स्थान है। नागौर जिले की कुल साक्षरता प्रतिशत 57.28 है। अजमेर संभाग की सामाजिक एवं सांस्कृतिक पृष्ठभूमि को देखने पर यह पता चलता है कि यहाँ पर विविध जातियाँ निवास करती हैं।

प्राथमिक शिक्षा से सम्बन्धित अध्ययनों में बुच एवं सुडाम (1990), बिर्दी (1992), पाल (1995), प्रकाश (1996), शर्मा (1997), सिंह (1997), सुराणा (2003), राव (2004), कुकरेती एवं सक्सेना (2004 अ), गोदिका (2005), मैखुरी (2005), सिन्हा एवं सिन्हा (1995), प्रधान (2008), शर्मा (2012), मिश्रा (2013) आदि के शोध अध्ययन प्रमुख हैं। अधिकतर शोधों में शैक्षिक विकास के प्रमुख संकेतकों के रूप में शर्मा (1977), पाल (1995), गोयल (1997), शर्मा (1997), कुकरेती एवं सक्सेना (2004 ब), राजपूत (2005), नंदा (2006), पाराशर

*शोधार्थी, शिक्षा संकाय, वनस्थली विद्यापीठ, टोंक (राजस्थान)
**एसोशिएट प्रोफेसर, शिक्षा संकाय, वनस्थली विद्यापीठ, टोंक (राजस्थान)

(2011) एवं सक्सेना (2012) आदि ने नामांकन की प्रवृत्ति का अध्ययन किया है। अधिकतर शोधकर्ताओं ने अपने अध्ययनों में विद्यालयों में नामांकन की प्रवृत्ति को शैक्षिक विकास का कारक मानकर अपने शोध में विद्यालयों में नामांकन की प्रवृत्ति का अध्ययन किया है।

अजमेर संभाग में 1991 से 2010 तक प्राथमिक विद्यालयों में विद्यार्थी नामांकन का विकास किस प्रकार हुआ है?प्राथमिक विद्यालयों में विद्यार्थियों के नामांकन में वृद्धि करने के लिए सरकार द्वारा क्या–क्या प्रयत्न हुए हैं?तथा इस स्तर पर विद्यार्थियों के नामांकन में वृद्धि करने के निजी क्षेत्र ने क्या प्रयत्न किये हैं?यह जानने के क्रम में शोधकर्ता द्वय ने अजमेर संभाग में 1991 से 2010 तक की अवधि में प्राथमिक विद्यालयों में विद्यार्थी नामांकन की प्रवृत्ति का अध्ययन करना तय किया है।

अध्ययन का उद्देश्य

प्रस्तुत अध्ययन का अग्रांकित उद्देश्यों की प्राप्ति हेतु किया गया है–

1. अजमेर संभाग में 1991 से 2010 तक प्राथमिक विद्यालयों में कुल विद्यार्थी नामांकन की प्रवृत्ति का अध्ययन करना।
2. आलोच्य अवधि में प्राथमिक विद्यालयों में विद्यार्थी नामांकन की प्रवृत्ति का शैक्षिक योजनाओं एवं कार्यक्रमों के सन्दर्भ में अध्ययन करना।
3. प्राथमिक विद्यालयों में कुल विद्यार्थी नामांकन की प्रवृत्ति के सन्दर्भों के विषय में विशेषज्ञों की प्रतिक्रियाओं का अध्ययन करना।

अध्ययन की परिसीमन

समय एवं संसाधनों की सीमित उपलब्धता, क्षेत्र की व्यापकता, सुविधाओं, शोधकार्य की निरन्तरता, गहनता एवं एकाग्रता की दृष्टि से प्रस्तुत शोध अध्ययन में राजस्थान राज्य के अजमेर संभाग में औपचारिक शिक्षा के अन्तर्गत 1991 से 2010 तक के राजकीय व मान्यता प्राप्त निजी प्राथमिक विद्यालयों में कुल नामांकन का अध्ययन किया गया है।

अध्ययन विधि

प्रस्तुत अध्ययन में अजमेर संभाग में प्राथमिक विद्यालयों में विद्यार्थी नामांकन (1991–2010) की प्रवृत्ति का अध्ययन करना था, इसलिए आलोच्य अवधि (1991–2010) में प्राथमिक विद्यालयों में विद्यार्थियों के नामांकन का वर्णन होने के कारण यह अध्ययन वर्णनात्मक प्रकार का है। नामांकन को अध्ययन की एक इकाई के रूप में लेने पर यह एक वैयक्तिक अध्ययन है। यह अध्ययन अतीत और वर्तमान से सम्बन्धित है तथा अवधि व स्तर विशेष पर नामांकन की प्रवृत्ति का विश्लेषण होने के कारण यह एक विकासात्मक अध्ययन है।

न्यादर्श

इस अध्ययन में अजमेर संभाग में 1991 से 2010 तक प्रारम्भिक शिक्षा (पूर्व प्राथमिक, प्राथमिक एवं उच्च प्राथमिक) में से एक इकाई प्राथमिक शिक्षा स्तर पर नामांकन (1991–2010) के द्वितीयक स्रोत से प्राप्त प्रदत्तों का उपयोग किया गया है। प्राथमिक विद्यालयों में कुल विद्यार्थी नामांकन की प्रवृत्ति में निहित सन्दर्भों को समझने के लिए प्राथमिक स्रोत के अन्तर्गत 10 शिक्षाविदों, 3 शिक्षा अधिकारियों, 10 प्रधानाध्यापकों एवं 20 प्राथमिक विद्यालयीन शिक्षकों का विशेषज्ञ के रूप में चयन न्यादर्श चयन की सौद्देश्यपूर्ण विधि से किया गया है।

अध्ययन उपकरण

प्रस्तुत अध्ययन में शोध उपकरण के क्रम में आवश्यक प्रदत्तों का संकलन करने के लिए शोधकर्ता द्वय द्वारा निरूपित प्रारूपों का उपयोग किया गया है। इन प्रारूपों का विकास प्रदत्तों की आवश्यकता एवं उपलब्धता के अनुसार अनवरत किया गया अर्थात् जिन–जिन प्रदत्तों की आवश्यकता हुई तथा ज्यों–ज्यों प्रदत्त उपलब्ध होते गये त्यों–त्यों प्रारूप का विकास होता चला गया। प्राथमिक विद्यालयों में कुल विद्यार्थी नामांकन की प्रवृत्ति में निहित सन्दर्भों को समझने के लिए शिक्षाविदों, शिक्षा अधिकारियों, प्रधानाध्यापकों एवं प्राथमिक विद्यालयीन शिक्षकों की प्रतिक्रियाएँ अर्द्ध संरचित साक्षात्कार द्वारा प्राप्त की गयी।

प्रदत्त विश्लेषण प्रक्रिया

इस अध्ययन में अजमेर संभाग में 1991 से 2010 तक प्रारम्भिक शिक्षा (पूर्व प्राथमिक, प्राथमिक एवं उच्च प्राथमिक) में से एक इकाई प्राथमिक शिक्षा स्तर पर नामांकन (1991–2010) के द्वितीयक स्रोत से प्राप्त

समय श्रेणी प्रदत्तों (संख्यात्मक) का प्रयोग मुख्यतया किया गया है। इस संभाग में 1991 से 2010 प्राथमिक विद्यालयों में नामांकन का विश्लेषण एवं व्याख्या करते हुए शोध निष्कर्ष प्राप्त किये गये।

प्रस्तुत अध्ययन में प्रदत्त विश्लेषण हेतु अजमेर संभाग में प्राथमिक विद्यालयों में कुल विद्यार्थी नामांकन का 1991 से 2010 तक के संख्यात्मक प्रदत्तों को व्यवस्थित करने एवं गणना करने हेतु इन्हें संगणक (कम्प्यूटर) में प्रविष्ट किया गया है। संगणक की सहायता से इन सारणियों के प्रदत्तों को तीन–तीन वर्षों के अन्तराल पर छः (6) समय श्रेणी बिन्दुओं (1991–92, 1994–95, 1997–98, 2000–01, 2003–04, 2006–07, 2009–10) में रखा गया। वर्ष 1991 से वर्ष 1993 तक के प्रदत्त उपलब्ध नहीं हो सकने के कारण अध्ययन की आन्तरिक वैधता को दृष्टिगत रख 'समय श्रेणी विश्लेषण' का आरम्भ सत्र 1994–95 से किया गया। चूँकि अध्ययन की आलोच्य अवधि का विस्तार 1994 से 2010 तक था इसलिए दशकीय विद्यार्थी नामांकन की प्रवृत्ति का अध्ययन करने हेतु आलोच्य अवधि को दो तार्किक कालखण्डों 1994–2000 को प्रथम/पहला दशक एवं 2001–2010 को द्वितीय दशक के रूप में वर्गीकृत किया गया है। उपर्युक्त समय श्रेणी बिन्दुओं के आधार पर रेखाचित्र निर्मित किया गया है।

प्राथमिक विद्यालयों में कुल नामांकन

सर्वप्रथम अजमेर संभाग के प्राथमिक विद्यालयों में कुल नामांकन को विश्लेषित किया गया है। प्राथमिक विद्यालयों में कुल नामांकन से संबंधित समय श्रेणी प्रदत्तों के आधार पर रेखाचित्र 1 और सारणी 1 का निर्माण किया गया है।

रेखाचित्र 1
अजमेर संभाग के प्राथमिक विद्यालयों में कुल विद्यार्थी नामांकन

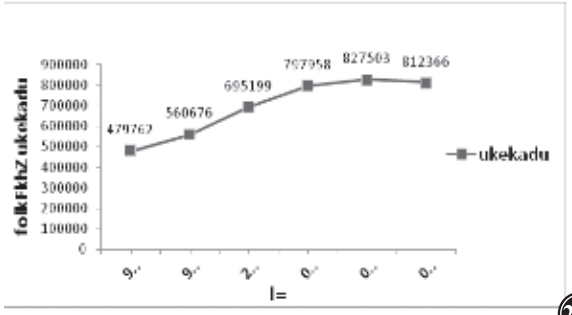

सारणी 1
अजमेर संभाग के प्राथमिक विद्यालयों में कुल विद्यार्थी नामांकन

वर्ष	कुल नामांकन	वृद्धि/कमी	वृद्धि दर
1991–92	–	–	–
1994–95	479762	–	–
1997–98	560676	80914	–16.87
2000–01	695199	134523	–23.99
2003–04	797958	102759	14.78
2006–07	827503	29545	+3.70
2009–10	812366	–15137	–1.83
कुल वृद्धि दर			
1994–2010	+332604		+69.33
दशकीय वृद्धि दर			
1994–2000	+215437		+44.90
2001–2010	+69305		+9.33

उपर्युक्त रेखाचित्र 1 एवं सम्बन्धित सारणी 1 के अध्ययन से यह ज्ञात होता है कि अजमेर संभाग के प्राथमिक विद्यालयों में कुल नामांकन संख्या 1994 में 479762 थी। वर्ष 1997–98 में विद्यार्थी नामांकन संख्या में वृद्धि हुई और वृद्धि दर 16.87 प्रतिशत धनात्मक रही है। बिन्दु वर्ष 2000–01 में नामांकन में धनात्मक वृद्धि की दर 23.99 प्रतिशत रही। लेकिन बिन्दु वर्ष 2003–04 में विद्यार्थी नामांकन में पहले की तुलना में वृद्धि कम हुई और वृद्धि दर केवल 14.78 प्रतिशत धनात्मक रही। वर्ष 2006–07 में नामांकन संख्या में आंशिक वृद्धि हुई और वृद्धि दर 3. 70 प्रतिशत धनात्मक रही। परन्तु वर्ष 2009–10 में नामांकन में कमी आई और वृद्धि दर 1.83 प्रतिशत ऋणात्मक रही। अन्य वर्षों में विद्यार्थी नामांकन में वृद्धि की प्रवृत्ति सतत् धनात्मक रही है।

विद्यार्थी नामांकन की दशकीय वृद्धि दर की विवेचना करने से पता चलता है कि जहाँ प्रथम दशक के दौरान विद्यार्थी नामांकन में वृद्धि दर 44.90 प्रतिशत धनात्मक रही थी, वहीं द्वितीय दशक में नामांकन में वृद्धि की प्रवृत्ति केवल 9.33 प्रतिशत धनात्मक रही है। कुल आलोच्य अवधि में विद्यार्थी नामांकन में कुल वृद्धि दर 69. 33 प्रतिशत धनात्मक रही है।

निष्कर्ष एवं विवेचना

अजमेर संभाग के प्राथमिक विद्यालयों में कुल नामांकन उपलब्धता के अध्ययन से यह निष्कर्ष निकलता है कि अजमेर संभाग के प्राथमिक विद्यालयों के कुल विद्यार्थी नामांकन में वृद्धि की प्रवृत्ति बिन्दु वर्ष 2009–10 को छोड़कर अन्य वर्षों में सतत् धनात्मक रही है। बिन्दु वर्ष 2000–01 में प्राथमिक विद्यालयों के विद्यार्थी नामांकन में वृद्धि की प्रवृत्ति तीव्र धनात्मक रही। वहीं बिन्दु वर्ष 2009–10 में विद्यार्थी नामांकन की प्रवृत्ति में ऋणात्मक वृद्धि दर्ज हुई। प्रथम दशक में द्वितीय दशक की तुलना में वृद्धि की प्रवृत्ति अधिक रही है। कुल आलोच्य अवधि में प्राथमिक विद्यालयों में नामांकन में वृद्धि की प्रवृत्ति तीव्र धनात्मक रही है।

अजमेर संभाग के प्राथमिक विद्यालयों में विद्यार्थी नामांकन में सर्वाधिक वृद्धि की प्रवृत्ति बिन्दु वर्ष 2000–01 में रही है। इसका मुख्य कारण राज्य सरकार द्वारा दूर–दराज के गाँव–ढ़ाणियों में राजीव गाँधी पाठशालाओं का खोला जाना, अभिभावकों में शिक्षा के प्रति जागृति आना, निःशुल्क पाठ्यपुस्तकों का दिया जाना, चाइल्ड ट्रेकिंग सर्वे के द्वारा अनामांकित बच्चों को विद्यालय से जोड़ा जाना, विद्यालय में मध्याह्न का भोजन उपलब्ध करवाना व प्रवेशोत्सव कार्यक्रम के साथ–साथ सर्व शिक्षा अभियान, राजकीय विद्यालयों में विभिन्न वर्गों के विद्यार्थियों को दी जाने वाली छात्रवृत्तियाँ, विद्यालयों के परीक्षा परिणाम में सुधार, कम्प्यूटर शिक्षा कार्यक्रम, रेडियो प्रसारण कार्यक्रम, इंस्पायर अवार्ड, शारीरिक शिक्षा एवं सहशैक्षिक प्रवृत्तियाँ, बाल गणेश चिंरजीवी योजना, लहर कार्यक्रम, गुरू–मित्र योजना, विद्यार्थी मित्र योजना, शिक्षा आपके द्वार योजना व सुरक्षा बीमा योजना का आकर्षण आदि हो सकते हैं। इसी प्रकार नामांकन में सर्वाधिक कमी की प्रवृत्ति बिन्दु वर्ष 2009–10 में रही जिसके मुख्य कारण समस्त बालिका प्राथमिक विद्यालयों का उच्च प्राथमिक विद्यालयों में क्रमोन्नत होना और विद्यार्थियों का शाला परित्याग आदि हो सकते हैं। अन्य बिन्दु वर्षों में नामांकन में वृद्धि की प्रवृत्ति कम या अधिक लेकिन सतत् धनात्मक रही है।

विशेषज्ञों के अनुसार अजमेर संभाग के प्राथमिक विद्यालयों में कुल विद्यार्थी नामांकन में सर्वाधिक वृद्धि की प्रवृत्ति अनेक कारणों का परिणाम है। इनमें सबके लिए शिक्षा कार्यक्रम, बाल श्रम उन्मूलन सम्बन्धी नियमों का कड़ा होना, राज्य सरकार द्वारा पूर्व निर्धारित प्रक्रिया के विपरीत गाँवों व ढ़ाणियों में प्राथमिक शिक्षा स्तर के लिए नसे प्रकार की राजीव गाँधी पाठशाला खोलना, विद्यार्थियों को निःशुल्क पाठ्य–पुस्तकें देना, अभिभावकों में शिक्षा के प्रति जागृति आना, सी.टी.एस. सर्वे के अनुसार बच्चों को विद्यालयों से जोड़ना व विद्यालयों में मध्याह्न का भोजन उपलब्ध करवाना, बालिका नामांकन बढ़ाने के लिए किये जा रहे राजकीय, स्वैच्छिक संस्थाओं एवं वैयक्तिक प्रयासों का सफल होना एवं विद्याार्थियों का ठहराव बढ़ना मुख्य हैं। वहीं बिन्दु वर्ष 2009–10 में अजमेर संभाग के प्राथमिक विद्यालयों के नामांकन में वृद्धि की प्रवृत्ति कम रहने का मुख्य कारण अराजकीय (निजी) विद्यालयों में छात्राओं का अनुपात छात्रों की अपेक्षा कम होना, समस्त बालिका प्राथमिक विद्यालयों व कुछ सहशिक्षा प्राथमिक विद्यालयों का क्रमोन्नत होना व विद्यार्थियों का शाला परित्याग एवं प्राथमिक कक्षाओं में छात्राओं का अनुपात छात्रों से कम होना रहे हैं।

सन्दर्भ सूची

बुच, एम.बी. और सुडामे, जी.आर. (1990), अर्बन प्राइमरी एजुकेशन इन गुजरात एन इन डेप्थ स्टडी, द महाराजा सियाजीराव यूनिवर्सिटी ऑफ बड़ौदा 1136.

बिर्दी, बिमलेश (1992), ए स्टडी ऑफ द ग्रोथ एण्ड डेवलपमेन्ट ऑफ द प्राइमरी एजुकेशन इन पंजाब फ्रॉम 1947 टू 1987, पीएच.डी. (एजुकेशन), पंजाबी यूनिवर्सिटी 1134.

गोदिका, साधना (2005), प्राथमिक शिक्षा में जयपुर की कच्ची बस्ती के शिक्षार्थियों की भागीदारी : एक विश्लेषणात्मक अध्ययन, अप्रकाशित शोध प्रबन्ध, शिक्षा संकाय, वनस्थली विद्यापीठ, वनस्थली.

गवर्नमेंट ऑफ इण्डिया (2007), एनुअल रिपोर्ट (2006–2007), डिपार्टमेंट ऑफ़ हायर एजुकेशन, मिनिस्ट्री ऑफ़ ह्यूमन रिसोर्स डेवलपमेंट, नडिपार्टमेंट ऑफ़ हायर एजुकेशन, न्यू देल्ही.

कुकरेती, बी. आर एण्ड सक्सेना, मनोज (2004, अ), ड्रॉप आऊट प्रोब्लम्स अमंग ट्राइबल स्टुडेण्ट्स एट स्कूल लेवल, कुरूक्षेत्र, 52 (11), 26–30.

कुकरेती, बी. आर एण्ड सक्सेना, मनोज (2004, ब), प्राइमरी एड्यूकेशन इन यू.पी.: एन एनेलिटिकल स्टडी, ग्यान जर्नल ऑफ एड्यूकेशन, 1(1), 1–7.

मिश्रा, डी. (1990), ए स्टडी ऑफ प्री प्राइमरी एजुकेशन प्रोब्लम्स इन कटक, एम.फिल. (एजुकेशन), रवेन्सा कॉलेज, कटक.

मिश्रा, उपमा (2009), राजस्थान राज्य की प्राथमिक कक्षाओं में बालिका शाला परित्याग (ड्रॉप आउट) दर : एक प्रवृत्यात्मक विश्लेषण (2001–06), अप्रकाशित शोध अध्ययन, शिक्षा संकाय, वनस्थली विद्यापीठ, वनस्थली.

एन.सी.ई.आर.टी. (1998), सिक्स्थ आल इंडिया एजुकेशनल सर्वे (1993–94), एन.सी.ई.आर.टी., न्यू देल्ही.

एन.सी.ई.आर.टी. (2005), सेवंथ आल इंडिया एजुकेशनल सर्वे, प्रोविसिओनल स्टेटिस्टिक्स एज ओन सितम्बर 30, 2002. एन.सी.ई.आर.टी., न्यू देल्ही.

एन.सी.ई.आर.टी. (2006), नेशनल फोकस ग्रुप ओन अर्ली चाइल्डहुड एजुकेशन, पोजीशन पेपर, एन.सी.ई. आर.टी., न्यू देल्ही.

नंदा, रेणु (2006), कंसर्न अबाऊट प्राइमरी एजुकेशन इन रूरल एरिया : एन इन डेप्थ स्टडी ऑफ राजौरी डिस्ट्रिक्ट (जम्मू एण्ड कश्मीर स्टेट), इंडियन एजुकेशनल एब्सट्रेक्ट्स (प्राइमरी एजुकेशन), एन.सी.ई. आर.टी, नई दिल्ली, वो. 34 नं.–4, फरवरी.

न्यूपा (2006–07), डिस्ट्रिक्ट रिपोर्ट कार्ड, नेशनल यूनिवर्सिटी ऑफ एजूकेशनल प्लानिंग एण्ड एडमिनिस्ट्रेशन, न्यूदेहली.

न्यूपा (2007), एजुकेशन इन इंडिया अट अ ग्लांस, नेशनल यूनिवर्सिटी ऑफ़ एजुकेशनल प्लानिंग एंड एडमिनिस्ट्रेशन, न्यू देल्ही.

पाल, एस. पी. एंड पंत, डी. के. (1995), स्ट्रेटेजीज टू इम्प्रूव स्कूल एनरोलमेंट रेट इन इंडिया, जर्नल ऑफ़ एजुकेशनल प्लानिंग एंड एडमिनिस्ट्रेशन, 9 (2) 169–171.

पाराशर, दीपशिखा (2011), राजस्थान राज्य में सर्वशिक्षा अभियान के अन्तर्गत बालिका शिक्षा हेतु किए जाने वाले प्रयास : एक प्रवृत्यात्मक अध्ययन (2005–2010) अप्रकाशित शोध अध्ययन (पीएच.डी.), शिक्षा संकाय, वनस्थली विद्यापीठ, वनस्थली.

प्रधान, जी.सी. (2009), ए स्टडी ऑन ग्रोथ एण्ड प्रजेन्ट स्टेटस ऑफ एलीमेन्टरी एजुकेशन इन गोवा, जर्नल ऑफ इंडियन एजुकेशन, एन.सी.ई.आर.टी, नई दिल्ली, 34, (4), फरवरी, 90–112.

प्रकाश, श्री (1996), भारत में प्रारम्भिक शिक्षा का सार्वजनीनकरण, समस्यायें और संभावनायें, परिप्रेक्ष्य – शैक्षिक योजना और प्रशासन का सामाजिक–आर्थिक संदर्भ, नीपा, नई दिल्ली, 3 (2).

राव, पुल्ला डी. (2004), डवलपमेंट ऑफ प्राइमरी एण्ड अप्पर प्राइमरी एड्यूकेशन इन आन्ध्रप्रदेश डयूरिंग 1956–57 टू 1999–2000, जर्नल्स ऑफ इण्डियन एड्यूकेशन, 30, (2), अगस्त.

राजपूत, प्रीति (2005), एक उपखण्ड में माध्यमिक शिक्षा के विकास की प्रवृत्ति, अप्रकाशित लघु शोध प्रबन्ध, वनस्थली विद्यापीठ, वनस्थली (राज.)।

सक्सेना, कृष्णा (2012), राजस्थान में माध्यमिक स्तर पर शैक्षिक विकास की प्रवृत्ति (1980–2008) का अध्ययन, अप्रकाशित शोध प्रबन्ध (पीएच.डी.), वनस्थली विद्यापीठ.

शर्मा, एस.पी. (1977), ए स्टडी ऑफ द डेवलपमेन्ट ऑफ प्राइमरी एजुकेशन इन देहली फ्रोम 1913 टू 1968, पीएच.डी. (एजूकेशन), कुरूक्षेत्र यूनिवर्सिटी, कुरूक्षेत्र.

शर्मा, अनुसूया (2010), कोटा संभाग में पारम्परिक संस्कृत शिक्षा के विकास (1990 से 2008–09) का अध्ययन, अप्रकाशित शोध प्रबन्ध (पीएच.डी.), वनस्थली विद्यापीठ.

सिंह, के.आई. (1997), ए क्रिटिकल स्टडी ऑफ द डेवलपमेन्ट ऑफ प्राइमरी एजुकेशन इन द नॉर्थ–इस्टर्न रीजन ऑफ इंडिया विद स्पेशल रेफरेन्स टू मणिपुर, पीएच.डी. 414.

सिन्हा, ए एण्ड सिन्हा, ए.के. (1995) प्राइमरी स्कूलिंग इन नार्थ इंडिया : अ फील्ड इन्वेस्टीगेशन, सेंटर फॉर सस्टेनेबल डेवलपमेंट, लाल बहादुर शास्त्री नेशनल अकादमी ऑफ़ एडमिनिस्ट्रेशन, मसूरी.

सुराणा, अजय (2003), राजस्थान के एक जिले में शैक्षिण विकास का पार्श्व चित्र 1981–2000, एक अध्ययन, अप्रकाशित शोध प्रबन्ध (पीएच.डी.), वनस्थली विद्यापीठ, वनस्थली (राज.).